B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : The Rise of Adolf Hitler(PPT)

B.A. Part-1

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

हिटलर के उदय के कारण

- जर्मनी में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ही वहां की राजसत्ता के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो चुका था। युद्ध के अंतिम दिनों में जर्मन लोगों के कष्टों में और भी वृद्धि हुई। परंतु जर्मनी जब युद्ध में पूरी तरह पराजित हो गया तो जर्मनवासियों का धैर्य टूट गया।
- साथ ही प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात जर्मनी में जो गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना हुई थी, उसमें विद्यमान दोषों और कमियों ने हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि को तैयार किया।
- हिटलर के उदय को जर्मनी के तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों, सरकार की नीतियों की असफलता एवं हिटलर के कुशल नेतृत्व जैसे विभिन्न पहलूओं के परिप्रेक्ष्य में देखे जाने की आवश्यकता है। जर्मनी में हिटलर के उदय के कई कारण हैं जिसे हम निम्न शीर्षकों में बाँट कर अध्ययन कर सकते हैं -

वर्साय की अपमानजनक संधि

- प्रथम विश्व युद्ध में विजित मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी की गणतंत्र सरकार के प्रतिनिधियों को 'वर्साय की संधि' पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया गया। संधि के द्वारा जर्मनी के बहुत सारे प्रदेशों को छीन लिया गया तथा उसका निःशस्त्रीकरण कर दिया गया।
- युद्ध में पराजय तथा वर्साय की संधि की अनुचित तथा थोपी गई शर्तों तथा व्यवस्थाओं के कारण अनेक जर्मन लोगों ने अपने को अपमानित महसूस किया। हिटलर ने अपमान के इस भाव का लाभ उठाया। उसने जर्मन लोगों से खुलेआम कहा कि अगर सत्ता उसे सौंप दी जाएगी तो वह सर्वप्रथम 'वर्साय की संधि' को कूड़ेदान में फेंक देगा तथा जर्मनी को खोई हुई अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुनः दिलाएगा।
- हिटलर के वायदों तथा नाजी पार्टी के घोषित कार्यक्रम से लोगों को यह विश्वास हो गया कि केवल हिटलर तथा उसका दल (नाजी पार्टी) ही जर्मनी को अपनी उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचा सकता है।

आर्थिक संकट

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी को अपार धन की हानि हुई। युद्ध के पश्चात हुई 'वर्साय की संधि' के माध्यम से एक बड़ी राशि युद्ध क्षतिपूर्ति के भुगतान के रूप में उस पर लाद दी गई। उसके आयात-निर्यात ठप्प हो गए। जर्मनी के अधिकांश उपनिवेश छीन कर विजित राष्ट्रों ने आपस में बांट लिए थे। उपनिवेश के छिन जाने से जर्मनी के उद्योग तथा व्यापार नष्ट हो गए।
- सन 1929-30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से जर्मनी पर भी व्यापक दुष्प्रभाव पड़ा। जर्मनी में गरीबी, बेरोजगारी तथा भुखमरी अपने चरम पर थी। गणतंत्र इनमें से ज्यादातर समस्याओं का समाधान ढूंढने में असफल रहा।
- हिटलर ने लोगों को विश्वास दिलाया कि एक महान दल तथा एक महान नेता ही इन सभी समस्याओं से जर्मनी के लोगों को तुरंत छुटकारा दिला सकता है। उसने बेरोजगारी दूर करने, जर्मनी का औपनिवेशिक विस्तार करने, उद्योग, कृषि तथा व्यापार में अत्यधिक प्रगति करने तथा लोगों को खुशहाल बनाने का आश्वासन दिया। इस आश्वासन से जर्मन लोग नाजी दल तथा हिटलर की ओर आकृष्ट हुए। परिणामस्वरूप नाजी दल तथा हिटलर दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर बढ़ने लगा।

साम्यवाद का भय

- हिटलर अथवा नाजी पार्टी के उदय का एक प्रमुख कारण साम्यवाद का बढ़ता हुआ भय था। रूस की बोल्शेविक क्रांति 1917 की सफलता से उत्साहित होकर साम्यवादियों ने विश्व भर में साम्यवादी सरकार गठित करने की बात की, एक ऐसी साम्यवादी सरकार जिसके अंतरराष्ट्रीय संगठन का केंद्र रूस था।
- हिटलर ने जर्मनी पर रूस के प्रभाव का भय दिखला कर जर्मन जनता को अपने पक्ष में कर लिया। जर्मनी के पूंजीपति, उद्योगपति, धनिक वर्ग, जागीरदार एवं धार्मिक व्यक्ति साम्यवाद से डरती थी। धनिक वर्ग को राष्ट्रीयकरण का डर था, सामंत एवं जमींदार को भूमि छीन जाने का जबकि धार्मिक व्यक्तियों को परंपरा एवं धर्म की समाप्ति का भय था।
- परिणामस्वरूप जनसाधारण एवं श्रमिक वर्ग, नाजी पार्टी में शामिल होते चले गए। उद्योगपति, बड़े पूंजीपति तथा जमींदार हिटलर के उत्कर्ष में अपना हित समझते थे। उन्होंने धन से हिटलर एवं नाजी पार्टी की सहायता की जिससे हिटलर एवं उसके दल का तीव्र गति से उत्कर्ष हुआ।

यहूदियों के प्रति घृणा

- जर्मनी में यहूदियों की संख्या जर्मन जनसंख्या की तुलना में नगण्य थी परंतु वे व्यापार, व्यवसाय और राजनीति में अग्रणी थे। यहूदी वर्ग जर्मनी का वैभवशाली वर्ग था, साधारण जनता इन्हें शोषक समझ कर घृणा करते थे। प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय को जर्मन जनता यहूदियों के विश्वासघात से जोड़कर देखती थी। फलतः यहूदी विरोधी भावनाएं वहां व्याप्त थी।
- हिटलर को यहूदियों से बड़ी घृणा थी क्योंकि उसका विश्वास था कि उन्हीं की स्वार्थी तथा कंजूसी प्रवृत्ति के कारण जर्मनी की प्रथम विश्व युद्ध में पराजय हुई थी। हिटलर का यह पक्का विश्वास था कि यह युद्ध के दिनों में शत्रु से मिल गए तथा इन्होंने देश को धोखा दिया। देश के अधिकांश व्यापार तथा उद्योग इन्हीं के हाथों में थे लेकिन इन्होंने देश की प्रतिरक्षा में देशभक्तों तथा सेना की कोई मदद नहीं की थी।
- हिटलर ने यहूदियों को जर्मनी से भगाने का कार्यक्रम अपनी पार्टी (नाजी पार्टी) का कार्यक्रम बना लिया। उसने खुलेआम कहा कि अगर लोग उसे राजसत्ता में लाएंगे तो वह जर्मनी के लोगों को यहूदियों से पूर्णतया छुटकारा दिलाएगा। यही कारण है कि जर्मन जनता नाजी पार्टी तथा हिटलर के प्रति सहानुभूति रखने लगे।

स्वयं सेवक दल का निर्माण

- मित्र राष्ट्रों ने वर्साय की संधि के द्वारा जर्मनी की सैनिक शक्ति बहुत कम कर दी जिसके कारण बहुत से सैनिक बेरोजगार हो गए। ये बेरोजगार सैनिक हिटलर के 'स्वयं सेवक दल' में शामिल हो गए और नाजी पार्टी तथा हिटलर के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- हिटलर ने इन्हीं सैनिकों के सहयोग से अपनी सेना का गठन किया। 'स्वयं सेवक दल' का प्रमुख कार्य नाजी पार्टी की रक्षा करना और अन्य विरोधी राजनीतिक दलों की सार्वजनिक सभाओं को भंग करता था।

सेना और नौकरशाही का समर्थन

- जर्मन सेना तथा नौकरशाही के अधिकांश उच्च वर्गीय परंपरावादी लोग जनतंत्र से घृणा करते थे और प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी के निःशस्त्रीकरण से उन्हें ठेस लगी थी। हिटलर द्वारा युद्ध और पुनः सशस्त्रीकरण की बात करने से सैनिकों में उसके प्रति उत्साह बढ़ा और वे हिटलर एवं नाजी पार्टी के समर्थक बने।

वाइमर गणतंत्र के प्रति असंतोष

- हिटलर के उदय का एक कारण जर्मन जनता का वाइमर गणतंत्र के प्रति असंतोष था। प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम दिनों में जर्मनी में गणतंत्र की स्थापना हुई थी किंतु यह गणतंत्र जर्मन जनता का सम्मान पाने में असफल रहा। वस्तुतः जर्मन जनता गणतंत्र को अपनी पराजय और अपमान का प्रतीक मानती थी क्योंकि गणतंत्र के नेताओं ने ही वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर किए तथा मुआवजा देने की बात स्वीकार की। अतः जनता ने गणतंत्र के विरुद्ध हिटलर और नाजी पार्टी का साथ दिया।

वाइमर संविधान की कमियां

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद वाइमर नामक स्थान पर जर्मनी के लिए एक संविधान बनाया गया, जिसमें कई कमियां विद्यमान थी। यह कमियां थी- संकटकालीन स्थिति की घोषणा करने और आपातकालीन अधिकारों को प्राप्त करना, चुनाव की आनुपातिक प्रणाली आदि। संविधान में निहित इन्हीं कमियों ने नाजी पार्टी और हिटलर के उत्थान के लिए उर्वर भूमि प्रदान की।

हिटलर का व्यक्तित्व

- हिटलर एवं नाजी पार्टी के उत्थान में स्वयं हिटलर के व्यक्तित्व एवं गुणों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह असाधारण वक्ता था और भीड़ को मनमाने ढंग से नियंत्रित करने की क्षमता रखता था। साथ ही वह एक क्रूर संगठनकर्ता था और अपने लक्ष्य के मार्ग में आने वाले किसी भी शक्ति अथवा व्यक्ति को निर्ममता से कुचल देता था।
- उसने कई बार अपनी पार्टी का शुद्धिकरण किया, जिसका अर्थ था उन व्यक्तियों की हत्या जिनसे वह असंतुष्ट होता था। वह प्रचार तथा प्रसार करने में बहुत ही कुशल था। इसलिए जर्मनी की जनता उस पर अंधविश्वास करती थी और वह उसे देव तुल्य समझने लगे।

निष्कर्ष

- उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि अगर वर्साय की कठोर और अपमानजनक संधि जर्मनी पर नहीं थोपी गयी होती तो हिटलर और नाजीवाद का इतना आसानी से उदय नहीं होता। साथ ही जर्मनी के तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों ने भी हिटलर के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।